Dr. Sushma Choure (Netam)

Paper Publication- Personal

Year	2016	2017	2018	2019	2020
No.	-	-	1	-	-

Report-

Year	Title of Paper	Name of Author	Department of Teacher	Name of Journal	Year of Publication	ISSN/ISBN No.
2018	राजनीति प्रकिया में महिलाओं की दशा एवं दिशा	Dr. M.D. Pathak Chairman Editor in Chief	Dr. Sushma Choure (Netam)	Anthology: The Research	2018	ISSN 2456-4367

प्राचार्य
शास.रानी सूर्यमुखी देवी महाविद्यालय
छुरिया
जिला- राजनांदगांव (छ.ग.)

ISSN : 2456-4397 (P) • Bilingual / Monthly RNI : UPBIL/2016/68067 • Vol 3 • Issue 9 • December 2018

Multi-disciplinary Bi-lingual International Journal

Anthology The Research

Impact Factor
SJIF = 3.39
IIJIF = 4.02

ISSN 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-3* Issue-9* December 2018
Anthology : The Research

Editorial Board - Anthology : The Research
December- 2018
Executive Board

PATRON
Dr. M.D. Pathak
Chairman, Centre for Research & Development of Waste & Marginal Land
Ex. Director General, U.P. Council of Agriculture Research, U.P.
Ex. Director, Research and Training, International Rice Research Institute, Manila, Philipines
pathakmd1@gmail.com

EDITOR-IN -CHIEF
Dr. Asha Tripathi
Senior Vice-President,
Social Research Foundation, Kanpur
asha23346@gmail.com

EDITOR
Smt. Deepti Mishra
Treasurer,
S R F,Kanpur
anthology.srf@gmail.com

MANAGING EDITOR
Dr. Rajeev Mishra
Secretary,
S R F,Kanpur
indra.rajeev@gmail.com

CO- EDITOR
Dr. Nagratna Ganvir
Government Shivnath Science College,
Rajnandgaon, (C.G.)

EDITORIAL-ADVISORY BOARD

Anthropology
Dr. K. Bharathi
Arba Minch University,
Arba Minch,Ethiopia,
North Africa

Library Science
Dr. U. C. Shukla
Fiji National University,
Lautoka, Fiji
Dr. Chaminda Jayasundara
Fiji National University,
Lautoka, Fiji

Political Science and International Relation
Prof. Vandana Asthana
Eastern Washington University,
Cheney, WA

Sociology
Dr. Anju
D.D.U.Gorakhpur University,
Gorakhpaur
Dr. Sushma Singla
A.S.College for Women,
Khanna

Music
Shivani Raina
Govt. Degree College, Heeranagar,
Samba
Dr. Ahmedrazakhan Sarvarkhan Pathan
The Maharaja Sayajirao University of Baroda, Vadodara
Gujarat

History
Dr. R. S. Gurna
A.S. College Khanna,
Punjab
Dr. Anila Purohit
Govt. Dungar College,
Rajasthan

Political Science
Dr. Nagratna Ganvir
Govt. Shivnath Science College,
Rajnandgaon, C.G.
Dr. Pravesh Pandey
Shri Guru Nanak Mahila Mahavidyalaya, Jabalpur

Zoology
Dr. Devendra Nath Pandey
Govt.S.K.N.(P.G.) College,
Mauganj, Rewa (M.P.)
Dr. Krishna Kumar Raj
H.S.Gaur University,
Sagar, M.P.

प्राचार्य
शास. रानी सूर्यमुखी देवी महाविद्यालय
छुरिया
जिला –राजनांदगांव (छ.ग.)

ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-3* Issue-9* December- 2018
Anthology : The Research

Contents

S. No.	Particulars	Page No.
1.	बाल सुरक्षा– पारिवारिक मूल्यों के विकास में अभिभावकों की भूमिका एलिजाबेथ भगत, राजनादगाव, छ.ग.	01-04
2.	साहित्य एवं पत्रकारिता वी. नंदा जागृत, राजनांदगाव, छ.ग.	05-08
3.	राष्ट्र के विकास में महिलाओं का योगदान फुलसो राजेश पटेल, राजनांदगांव (छ.ग.)	09-11
4.	चुनाव में मीडिया की भूमिका (2014 के लोकसभा चुनाव के विशेष संदर्भ में) नागरत्ना गनवीर, राजनादगांव	12-14
5.	भारत में खाद्यान्न सुरक्षा–एक विवेचन शुभा शर्मा, दुर्ग, छ.ग.	15-18
6.	राजनीति प्रकिया में महिलाओं की दशा एवं दिशा सुशमा चौरे, राजनांदगॉव, छत्तीसगढ	19-22
7.	छत्तीसगढ़ की जनजातियॉ (जिला बालोद के विशेष संदर्भ में) अनुग्रहती जोंग, बालोद, (छ.ग.)	23-26
8.	महिला सशक्तिकरण में सरकारी योजनाओं की भूमिका आवेदा बेगम, राजनांदगांव (छ.ग.)	27-29
9.	दलित महिलाओं का सशक्तिकरण : एक अध्ययन मालती तिवारी, महासमुन्द, छ.ग.	30-33
10.	पंचायतीराज संस्थाएँ एवं महिला सहभागिता सरिता स्वामी, बलोद, छत्तीसगढ	34-36

प्राचार्य
शास. रानी सूर्यमुखी देवी महाविद्यालय
छुरिया
जिला –राजनांदगांव (छ.ग.)

ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-3* Issue-9* December- 2018
Anthology : The Research

राजनीति प्रक्रिया में महिलाओं की दशा एवं दिशा

सुषमा चौरे
सहायक प्राध्यापक,
राजनीति विज्ञान विभाग,
शास.रा.सु.मु.दे.महाविद्यालय
छुरिया, राजनांदगॉव,
छत्तीसगढ

सारांश

दुनिया के लगभग अधिकांश देशों में शताब्दियों से बालिकाएँ, किशोरियाँ युवतियाँ प्रौढाएँ केवल इस आधार पर भेदभाव का शिकार होती आयी है कि वे महिला है। महिला उत्पीडन अधिकांशत व्यापक सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक संरचना का हिस्सा है, जो महिलाओ को ऐसे उत्पीडन का हिस्सा बना देता है जिसके लिए सिर्फ राजनीति कारको या राज्य को ही दोषी नही माना जा सकता है।

पिछले कुछ वर्षो से महिलाओं के उत्थान हेतु "कल्याण और विकास" कार्यक्रमो में बजाय "सशक्तिकरण" पर जोर दिया जाने लगा है। सशक्तिकरण से अभिप्राय है अधिकार, सामर्थ्य और निर्णय प्रक्रिया को प्रभावित करने की क्षमता ।

मुख्य शब्द : मंत्रिपरिषद, महिला सशक्तिकरण, राजनीतिक प्रक्रिया।

प्रस्तावना

राजनीति प्रक्रियामे महिलाओं की भागीदारी से तात्पर्य है प्रमुख राजनीति पदो पर महिलाओं को आनुपातिक दृष्टि से चुना जाना, विधायिका मे महिलाओं का उनकी संख्या के अनुपात मे प्रतिनिधित्व होना, मंत्रिपरिषद जैसे नीति निर्माण निकायो में महिलाओं का समुचित प्रतिनिधित्व ।

इस तथ्य से इंकार नही किया जा सकता कि, किसी भी अधिकारिक अथवा पिछडे समूह को विकास की मुख्य धारा से जोडने, उसे आर्थिक, शैक्षणिक, सामाजिक तथा प्रशासनिक क्षेत्रो मे विकसित वर्गो के समकक्ष लाने मे राजनीति निर्णय प्रक्रिया की अहम भूमिका होती है। यदि ऐसे वर्गो की राजनीति मे समान रूप से भागीदारी सुनिश्चित कर दी जाये तो निश्चित रूप से विभिन्न क्षेत्रों में उन्हे अपने उन्नयन के अच्छे अवसर प्राप्त हो सकेगें । इस दृष्टि से सभी देशो मे महिलाओं की राजनीतिक प्रक्रिया में भागीदारी सुनिश्चित करने के प्रयास किये जा रहे है।

राजनीतिक एवं सार्वजनिक जीवन मे महिलाओं की सक्रिय भूमिका उनमें स्वावलम्बन की भावना पैदा करती है। इसी दृष्टि से 18 दिसम्बर 1976 को संयुक्त राष्ट्र की महासभा ने "महिलाओं के विरूद्ध सभी प्रकार के भेदभाव की समाप्ति पर अभिसमय" को सर्व सम्मति से स्वीकार किया। अभिसमय के अनुसार सभी राष्ट्र देश की राजनिति में महिलाओं को पुरूषो के समान अधिकार देंगे कहा।

1. चुनाव एवं जनमत संग्रह में मत देने तथा विधायिकाओं और अन्य सार्वजनिक निकायो में चुने जाने का अधिकार हो,
2. सरकारी नीतियों के निर्माण एव उनके कार्यान्वयन मे सहभागिता तथा सरकार मे सभी स्तर के पदो को धारण करने का अधिकार हो,
3. देश के राजनीतिक एवं सार्वजनिक जीवन मे सक्रिय गैर सरकारी संगठनो और संघो में सक्रिय रूप से भाग लेने का अधिकार हो.

राजनीतिक प्रक्रियामें महिला भागीदारी –बाधक तत्व

राजनीतिक प्रक्रियामे महिला भागीदारी के मार्ग में बाधक तत्व विद्यमान है। ये बाधक तत्व एक नही वरन् अनेक है तथा इनमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक सभी प्रकार के तत्व है। विभिन्न बाधक तत्वो की एक संक्षिप्त विवेचना इस प्रकार है।

प्राचार्य
शास. रानी सूर्यमुखी देवी महाविद्यालय
छुरिया
जिला –राजनांदगांव (छ.ग.)

राजनीतिक तत्व

राजनीतिक क्षेत्र मे अनेक ऐस कारक है जो महिलाओ की भागीदारी को बाधित करते है। लगभग सभी देशो की राजनीति 'पुरूष वाली और पुरूषो की कार्य शैली " (Male Dominated & Masculine Style Politics) पर है तथा उसमे महिलाओ की परिस्थितियों और सुविधाओ पर ध्यान नही दिया गया है। सासदीय बहसो के लम्बे घटे तथा उसके उपरात सासदीय समितियो कार्य, दलीय कार्य और निर्वाचन क्षेत्र से जुडे विभिन्न कार्य तथा इन कार्यो से जुडी विभिन्न यात्राएँ यह सब कुछ इतना अधिक हो जाता है कि महिलाएँ–पत्नी माँ और दादी भूमिका निभाने या गृहस्थी से जुडे सामरत कार्यो के साथ इनका तालमेल नही बिठा पाती । महिला को राजनीति मे प्रवेश करने से पूर्व पारिवारिक सदस्यों से अनुमति लेनी होती है, जो सामान्यता एक सरल कार्य नही है।

. नडिया शेवदोवा ने अपने एक लेख मे इन कठिनाइयो का उल्लेख इस प्रकार किया है–" किसी महिला के लिए राजनीति मे प्रवेश करने का विचार बना पाना बहुत अधिक कठिन है। एक बार वह अपना विचार बना ले, तब उसे इस सबध मे अपने पति, बच्चों और परिवार को तैयार करना होता है। जब वह इन सब कठिनाइयो को पार कर दल के टिकट के लिये आवेदन करे, तब पुरुष प्रतियोगी जिसके विरुद्ध उसे चुनाव लडना है उसके सबध मे कई तरह की कहानियां प्रचारित–प्रसारित करता है। इस सबके बाद जब उसका नाम दलीय नेताओ के सामने जाता है,तब वे उसे इस कारण उम्मीदवारी से वचित कर देते हैं कि उन्हे सीट खो देने का डर रहता है। 'अधिकाश अशो मे हम आज भी पुरुष प्रधान समाज में रह रहे हैं। और पुरुष प्रधान समाज के राजनीतिक क्षेत्र मे महिलाओ की भागीदारी कम हो यह नितांत स्वाभाविक है।

सामाजिक – आर्थिक तत्व

राजनीति महिलाओ का कार्य क्षेत्र नही है, सदियो से चला आ रहा यह विचार अब भी अनेक अशो मे बना हुआ है। परिणामत: महिलाएँ राजनीति की ओर उन्मुख नही होती और इस ओर उन्मुख होती है तो उन्हे विधिक प्रकार से हतोत्साहित किया जाता है। इसके अतिरिक्त विश्व के अधिकाश देशो की राजनीति में धन की शक्ति बहुत अधिक बढ गई है। उम्मीदवारो को दल की ओर से बहुत थोडे ही वित्तीय साधन दिये जाते है। शेष वित्तीय साधन तो उम्मीदवारो को स्वयं ही जुटाने होते है। विविध क्षेत्रों से वित्तीय साधन जुटा लेने का कार्य पुरुष की तुलना में महिलायें ठीक प्रकार से नही कर पाती। यह बात उन्हें नुकसान की स्थिति में पहुँचा देती हैं। इन सबके अतिक्ति अधिकाश देशों में राजनीति बहुत भददा और विभिन्न दुष्टताओ से भरा खेल बन गया है। जैसे व्यक्तिगत लाछन, दुष्प्रचार, छलयोजित प्रसार राजनीतिक जोड–तोड, बल प्रयोग और फर्जी मतदान चुनाव मे विजय प्राप्त करने के गुर बन गये है। पुरुष इन सभी कार्यो में महिलाओ की शालीनता उन्हे इन कार्यो से विमुख करती है और वे नुकसान मे रहती हैं।

राजनीतिक शिक्षा और सम्पर्क सुविधाओं में महिलाओं का पिछडापन

शिक्षा राजनीति के सरचनात्मक तत्व का काम करती है और लगभग सभी देशों में महिलाये शिक्षा के संबंध मे पुरुषो से बहुत पीछे हैं। राजनीतिक शिक्षण प्रशिक्षण में तो वे पुरुषों से बहुत पीछे हैं। परिणामस्वरूप वे चुनाव लडने का विचार नही कर पाती। यदि पाती भी तो तो वे सफल नही हो पाती । मजदूर सघो, व्यवसायिक सघो और अन्य दबाव समूहों से महिलाओं के नाम को आगे बढाने की ओर प्रवृत्त नही होते। एक सोचनीय तथ्य यह है कि महिला सगठन भी सामान्यतया इस बात मे रूचि नही लेते कि चुनावों मे महिलाओं की उम्मीदवारी अधिक हो और जो महिला उम्मीदवार है, वे चुनाव मे विजयी हो।

मनोवैज्ञानिक तत्व

राजनीति में महिलाओं की कम भागीदारी में मनोवैज्ञानिक तत्वो का भी योग है। राजनीति उनका कार्यक्षेत्र हो सकता है और वे चुनाव मे विजयी हो सकती है। इस बात के सबध मे सामान्यतया उनमें आत्मविश्वास का अभाव देखा गया है। अत वे राजनीति की ओर उन्मुख नही होती। 'राजनीति एक गन्दा खेल है' यह बात बहुप्रचारित है और बहुत कुछ अशो मे सत्य भी है स्वाभाविक रूप से महिलाए राजनीति मे भाग लेने की बात सरलता से नही सोच पाती।

जनसंचार साधनों (Medi) की भूमिका

महिलाओं की कम भागीदारी के लिये समाचार पत्र और टेलीविजन आदि जनसंचार के साधन अपनी लोकप्रियता बढाने और अपने व्यवसायिक हितों के कारण नारी की देह उसके सौदर्य और आकर्षण को ही केद्र बिन्दु बनाये हुए हैं। इस बात को भुला दिया गया है कि नारी न केवल आकर्षक शरीर वरन ज्ञान और समझ से परिपूर्ण मस्तिष्क और रचनात्मकता की धनी हैं।

कुछ अन्य तत्व भी हैं, साधारण बहुमत की पद्धति भी राजनीति में नारी की कम भागीदारी के लिए उत्तरदायी बताई जाती है। प्रमुख कारण तो स्वय पुरुष और समाज के एक वर्ग की पुरूषवादी सोच और निहित स्वार्थ ही हैं। विडम्बना यह हैं कि स्वयं नारी जाति का एक वर्ग पुरुषवादी सोच से ग्रस्त हैं।

प्राचार्य
शास. रानी सूर्यमुखी देवी महाविद्यालय
छुरिया
जिला–राजनांदगांव (छ.ग.)

राजनीति मे महिला भागीदारी को बढ़ाने के लिये सुझाव

महिलाओं का राजनीतिकरण

महिलाओ का राजनीतिकरण महिला भागीदारी को बढ़ाने का निश्चित उपाय है। महिलाओ का राजनीतिकरण एक व्यापक धारणा है और इसके अंतर्गत अनेक बात आती है। जैसे सूचना विचार और ज्ञान राजनीति का सरचनात्मक ढाचा है। अत महिलाओं की सामान्य जीवन और राजनीति के सबध मे अधिकाधिक जानकारी देने, उनके विचार और ज्ञान को आगे बढ़ाने और राजनीति के प्रति उनमे अधिक से अधिक रूचि पैदा करने की प्रत्येक सभव चेष्टा की जानी चाहिये।

महिलाओं को अपनी समस्याओं, सामाजिक समस्याओ जीवन और प्रश्नों पर बातचीत के लिये अधिकाधिक प्रोत्साहित किया जाना चाहिये। महिलाओ मे आत्मविश्वास जागृत किया जाना चाहिए तथा इन्हे इस बात के लिये प्रेरित किया जाना चाहिए कि "यदि राजनीति एक गदा खेल है" तो इस खेल की गन्दगी को कम करने और इसमे ताजगी लाने के लिये इसमे प्रवेश करना चाहिये।

महिला संगठित हो, विशेषतया राजनीतिक रूप में संगठित हो

राजनीति दलो के अन्दर और बाहर महिलाओ का सगठित होना चाहिये। महिलाएं अधिक से अधिक सख्या मे अपनी पसद के राजनीति दल की सदस्यता प्राप्त करें और दल मे स्वय को प्रभावी बनाये। अधिकाश राजनीतिक दलों के नेतृत्व पद पर पुरुष आसीन हैं। उम्मीदवारो के चयन मे उनकी अपने लिंग आधारित भूमिका होती है। इस भूमिका के प्रभाव को कम करने के लिये महिलाओं को इस बात पर और देना चाहिये कि उम्मीदवारो के चयन के लिये स्पष्ट नियम हो तथा नेतृत्व के प्रति निष्ठा के बजाय दल के प्रति निष्ठा को अधिक महत्व दिया जावे। जब राजनीतिक खेल के नियम स्पष्ट होंगे तो अपने प्रतिनिधित्व को बढ़ाने के लिये महिलाएँ राजनीति विकसित कर सकती है। प्रत्येक राजनीतिक दल की महिला शखाको अधिक सशक्त बनाने के प्रयत्न किये जाने चाहिये। महिला शाखा सशक्त हो और अपने लिये अधिक प्रतिनिधित्व की मांग करे।

गैर सरकारी संगठनों, विषेशतया महिला संगठनों की भूमिका

राजनीति अपेक्षाकृत विशुद्धता और रचनात्मकता की दिशा मे आगे बढ़े, इस दृष्टि से गैर सरकारी संगठनों के द्वारा राजनीति मे महिलाओ की अधिक भागीदारी पर बल दिया जाना चाहिये। इस प्रसंग मे सभी महिला सगठनों की जागरूकता और सक्रियता को बढ़ाते हुए राजनीतिक दलो पर इस बात के लिये दबाव डाला जाना चाहिये कि, वे अपने सगठनात्मक ढाचे म महिलाओं को प्रभावशाली भागीदारी दे और अधिक सख्या में उन्हें उम्मीदवार बनाये। "महिला का वोट महिला के लिये" यह स्थिति तो सभव और उचित नही है लेकिन जब कभी चुनाव मैदान में समान योग्यता वाले उम्मीदवार हो, तब महिला उम्मीदवार के पक्ष को पूरी शक्ति के साथ मजबूत किया जाना चाहिए।

महिला उन्मुख करने की चेष्टा

महिलाओं की मजदूर सघो और अन्य सभी दबाव समूहों मे अपनी भागीदारी बढानी चाहिये। दबाव समूहों को "महिला उन्मुख" करने की चेष्टा की जानी चाहिये।

राजनीतिक क्षेत्र में सक्रिय महिलाओं और महिला संगठनों की स्थिति

जीवन के सभी क्षेत्रों में सचार माध्यमों की भूमिका महत्वपूर्ण है तथा अधिकाधिक महत्वपूर्ण होती जा रही है। राजनितिक क्षेत्र मे सक्रिय महिला संगठनों के द्वारा जन सचार माध्यमो के साथ मित्रता की स्थिति बनायी जानी चाहिये। मीडिया नारी सौदर्य को सामने लाने के साथ-साथ उसकी तेजस्विता, उर्जा, शक्ति और रचनात्मकता को भी पूरी कलात्मकता के साथ सामने लाये। जो महिलाएं राजनीति मे हैं वे अपना कार्य उचित रूप में कर सकें और अन्य महिलाएँ राजनीति मे आने के लिये प्रोत्साहित हो। इसके लिये आवश्यक है कि पुरुष वर्ग की समस्त सोच मे परिवर्तन हो और गृहस्थी के कार्य में पुरुष महिलाओं के साथ भागीदारी करे।

राजनीतिक प्रक्रिया में महिलाओं की सहभागीता कैसे बढे?

लिंग भेद एक सार्वभौमिक स्थिति है। निर्णय निर्माण प्रक्रिया मे महिलाओं को अपेक्षाकृत निरन्तर स्थान दिया जाता है। सहभागिता के दो आयाम है- परिणाम परक (Qualification) और गुणपरक (Qualification) कभी-कभी सहभागिता के परिणाम परक आयाम पर ही ध्यान दिया जाता है। उदाहरण के लिये महिलाएँ हैं तो समग्र जनसख्या का आधा भाग, परन्तु निर्णय निर्माण के स्तर पर उनकी भूमिका अत्यंत न्यूनतम होती हैं। इसे तुरन्त परिवर्तित किये जाने की आवश्यकता है। सहभागिता का स्तर परक न होकर गुण परक होना चाहिए।

विकास प्रक्रिया (Development) मे भी महिलाओं की सहभागिता बढायी जानी चाहिए। महिलाओ के शिक्षा के अवसरों मे बढोत्तरी, उनके उन कार्यो को अपेक्षाकृत मान्यता जो वे बिना किसी पारिश्रमिक के करती हैं, चुनावी राजनिति मे बेहतर प्रतिनिधित्व उनके अधिकारों की रक्षा ले लिये बेहतर वैधानिक और राजनीतिक उपाय और निर्णय निर्माण प्रक्रिया मे उनकी भूमिका कही अधिक सशक्त हो सकती हैं।

प्राचार्य
शास. रानी सूर्यमुखी देवी महाविद्यालय
छुरिया
जिला -राजनांदगांव (छ.ग.)

निष्कर्ष

महिलाओं के शासन में सहभागिता के सन्दर्भ में अर्थात राजनीति प्रक्रिया में सहभागिता के सन्दर्भ में निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता हैं की सही मायने में लोकतंत्र तभी हो सकता हैं, जब शासन और विकास कार्यक्रम दोनों में ही महिलाओं की सहभागिता हो। स्त्री और पुरूष दोनो की सहभागिता के बिना विकास कार्यक्रम के अभीष्ट लक्ष्य प्राप्त नहीं किये जा सकते हैं।

शासन में महिलाओं की सहभागिता ही यह सुनिश्चित कर सकती है की, समाज को अपने सदस्यों की प्रतिभा का पूरा लाभ मिल रहा है। हालही के वर्षो में भारत जैसे देशो में महिलाएँ राजनीतिक संस्थाओं और नौकरियों में आरक्षण की मांग करती है और स्थानीय स्वशासन की संस्थाओं में महिलाओं को पहले ही 33 प्रतिशत आरक्षण दिया जा चुका है।

समस्त व्यवस्था और राजव्यवस्था में महिला अपने लियें समानता और न्यायपूर्ण स्थान अवश्य प्राप्त कर लेगी। इस दिशा में यात्रा प्रारंभ हो गयी है। लक्ष्य अवश्य ही प्राप्त होगा, यात्रा की गति को बढ़ाने की आवश्यकता है। महिला जागृति और शक्तिशाली राजनीतिक प्रतिबद्धता यात्रा की गति को बढ़ाने में सहायक होगे।

सदर्भ ग्रथ सूची

1. राजनीति विज्ञान–डॉ पुखराज जैन
2. राजनीति विज्ञान– नन्दलाल
3. राजनीति विज्ञान – डॉ बी एल फाड़िया

प्राचार्य
शास. रानी सूर्यमुखी देवी महाविद्यालय
छुरिया
जिला–राजनांदगांव (छ.ग.)